बताओ तुम नफरत क्यों करते हो ?

- कँवल भारती -

जब हम कहते हैं कि दलित हिन्दू नहीं हैं, तो हिन्दुओं को लगता है कि हम बगावत कर रहे हैं।

लेकिन कोई भी हिन्दू गुरु और नेता हमें यह समझाने में कामयाब नहीं हुआ है कि हमारा कथन गलत है।

कोई भी हिन्दू गुरु और नेता हमें यह समझाने में कामयाब नहीं हुआ है कि हम किस आधार पर हिन्दू हैं।

कोई भी हिन्दू गुरु और नेता हमें यह समझाने में कामयाब नहीं हुआ है कि अगर हम हिन्दू हैं तो सदियों से हिन्दू हम पर अत्याचार क्यों करते आ रहे हैं?

कोई भी हिन्दू गुरु और नेता हमें यह समझाने में कामयाब नहीं हुआ है कि उनके धर्मशास्त्रों में हमारे लिए घृणा क्यों प्रदर्शित की गई है?

कोई भी हिन्दू गुरु और नेता हमें यह समझाने में कामयाब नहीं हुआ है कि अगर हम हिन्दू हैं तो हिन्दुओं ने हमें अधिकारों से वंचित क्यों रखा?

कोई भी हिन्दू गुरु और नेता हमें यह समझाने में कामयाब नहीं हुआ है कि अगर हम हिन्दू हैं तो हमें मारा क्यों जाता है?

हमें महाद में मारा गया, जहाँ हमने सार्वजनिक तालाब से पानी लेने का प्रयास किया।

हमनें नासिक में मारा गया, जहाँ हमने मन्दिर में प्रवेश करना चाहा।

और तो और जब हमने राजनीतिक अधिकारों की मांग की, तो देशभर के हिन्दू हमारे दुश्मन बन गये. क्यों किया था तुमने ऐसा?

तुमने हमें पढ़ने नहीं दिया, पक्का घर नहीं बनाने दिया, साफ़ कपड़े नहीं पहिनने दिए, साइकिल पर नहीं चढ़ने दिया, और कहते हो हम हिन्दू हैं।

हम हिन्दू नहीं हैं।

आज़ादी से पहले के अत्याचारों को छोड़ भी दें, तो उसके बाद से लगातार हम पर हमले किये जा रहे हैं, काटा जा रहा है, मारा जा रहा है, जलाया जा रहा है. बर्बाद किया जा रहा है. क्या-क्या जुल्म नहीं किया जा रहा है?

अच्छा यह बताओ—

ब्राह्मणों ने ठाकुरों पर कितने जुल्म किये?

ठाकुरों ने ब्राह्मणों पर कितने जुल्म किये?

ठाकुरों ने बनियों पर कितने जुल्म किये?

और बनियों ने ठाकुरों या ब्राह्मणों पर कितने जुल्म किये?

यह भी बताओ कि दलितों पर अत्याचार में ब्राह्मण, ठाकुर और बनिया सब एक क्यों हो जाते हैं?

हिन्दुओं तुम यह भी बताओ कि तुम्हारी नफरत का कारण क्या है?

दलितों ने तुम्हारे साथ ऐसा कौन सा जुल्म किया है कि सदियों से तुम सब मिलकर उसका बदला ले रहे हो?

कोरेगाँव में दलितों के आयोजन में भगवा पलटन क्या करने गई थी?

यह कौन सी नफरत है जो तुम्हें बार-बार दलितों को मारने के लिए उकसाती है?

हम तुम्हारी इस नफरत का स्रोत जानना चाहते हैं?

बताओ मोहन भागवत?

बताओ शिवसेना प्रमुख?

बताओ भाजपाइयों?

बताओ शंकराचार्यों ?

कोई तो कुछ बताओ?

यह नफरत तुम्हें कहाँ से मिली?

तुम हमसे ही नहीं, अपने सिवा सबसे नफरत करते हो—

तुम मुसलमानों से नफरत करते हो, ईसाईयों से नफरत करते हो, आदिवासियों से नफरत करते हो?

क्यों करते हो? क्या इन लोगों से तुम्हारी नफरत का सिरा दलितों से जुड़ा हुआ है?

क्या नफरत के सिवा भी तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है?

नफरत के सौदागरों,

अब बहुत हो चुका।

क्या तुम्हारे आकाओं को नहीं दिख रहा है, कि तुम्हारी नफरत का जवाब अगर नफरत से देने का सिलसिला शुरू हो गया, तो क्या होगा?

कायरों सत्ता का सहारा लेते हो?

पुलिस को अपना हथियार बनाते हो?

इससे तुम नफरत को और हवा दे रहे हो।

अगर तुम पीढ़ी-दर-पीढ़ी नफरत पाल सकते हो, तो समझ लो, दलितों में भी तुम्हारे लिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी नफरत भरती जा रही है।

इस नफरत को लेकर कैसा भारत बनाना चाहते हो—

संघियों, भाजपाइयों, हिन्दुओं !

न डॉक्टर न दवाइयां, फिर भी नए अस्पताल बना रही है जुमलेबाजों की सरकार

फ़रीदाबाद (म.मो.) हर जिले में मेडिकल कॉलेज खोलने के दावे करने वाली प्रदेश की मनोहरलाल खट्टर सरकार के पास पर्याप्त डाक्टर, कर्मचारी और यहां तक की दवाइयां तक भी उपलब्ध नहीं है। इसके बावजूद सरकार आम जनता के खून पसीने की कमाई को अस्पताल के भवन बनाने में व्यर्थ कर रही है। हाल में केन्द्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गूजर ने भी तिगांव में 30 बिस्तर के अस्पताल के भवन का शिलान्यास कर आम जनता को मूर्ख बनाने का प्रयास किया है।

जानकारी के मुताबिक गूजर ने तिगांव पीएचसी को अपग्रेड कर सीएचसी बनाने का दावा करते हुए अस्पताल के इस भवन का शिलान्यास किया है। इस भवन के निर्माण कार्य पर सरकार तीन करोड़ रुपये खर्च करने जा रही है। गूजर का दावा है कि यह भवन आगामी 20 अक्टूबर तक बन कर तैयार हो जाएगा।

यहां पहले से मौजूद पीएचसी में विभिन्न तरह की समस्याएं व्याप्त है। पीएचसी में इलाज के नाम पर तो खानापूर्ति की ही जाती है। इसके साथ ही यहां हर समय दवाइयों और अन्य संसाधनों का अभाव भी बना रहता है। डिस्पेंसरी के पुराने भवन की हालत पूरी तरह जर्जर हो चुकी है। जिसका बहाना बना कर ही नए भवन के निर्माण का कार्य शुरू किया जा रहा है।

यह डिस्पेंसरी तिगांव और आसपास के करीब दो दर्जन से ज्यादा गांवों में रहने वाली करीब एक लाख की आवादी के लिए बनाई गई थी। डिस्पेंसरी में प्रभारी डॉ. अजय गोयल, लेडी मेडिकल ऑफिसर डॉ. अनमोल के अलावा एक दंत रोग विशेषज्ञ, एक होम्योपैथिक डाक्टर, तीन स्टॉफ नर्स और दो चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी मौजूद है। यहां पर एक भी सफाई कर्मचारी तैनात नहीं है। जिसके कारण यहां हर समय गंदगी भरा माहौल बना रहता है। डिस्पेंसरी में व्याप्त अव्यवस्था के कारण इलाके के ग्रामीण यहां इलाज कराने से कतराते है। इतनी बड़ी आवादी होने के बावजूद यहां यहां हर रोज 100 से 150 ओपीडी ही मुश्किल से हो पाती है।

कहने को डिस्पेंसरी में प्रदेश की पहली मॉडर्न डिलिवरी हट मौजूद है। लेकिन अव्यवस्था के कारण गर्भवती महिलाएं यहां प्रसूति के लिए आने में कतराती है। गरीब तबके की महिलाएं यहां मजबूरी में प्रसूति के लिए आती है। जिसके कारण यहां पूरे महीने में फिलहाल 50 के आसपास प्रसूति हो रही है।

24 घंटे डिलिवरी हट खुलने के बावजूद यहां रात के समय कोई डाक्टर मौजूद नहीं रहता है। क्योंकि डिस्पेंसरी में डाक्टरों और स्टाफ नर्सो के रहने के लिए सरकारी क्वार्टरों की व्यवस्था है। ऐसे में डाक्टर दिन के समय अपनी ड्यूटी बजा कर शाम को अपने घर चले जाते हैं। रात को नाम के लिए ड्यूटी पर एक स्टाफ नर्स मौजूद रहती है, वह भी यहां आने वाली गर्भवती महिला को रेफर कर अपना कर्तव्य पूरा करती रहती है। पिछले दिनों इस डिस्पेंसरी के कर्मचारियों ने गंभीर हालत बता कर सुबह ही एक गर्भवती महिला को रेफर कर दिया था। लेकिन बाहर निकलते ही महिला की गेट पर प्रसूति हो गई थी।

इसके अलावा तिगांव विधानसभा क्षेत्र में सीएचसी कौराली और सीएचसी खेड़ीकलां भी मौजूद है। लेकिन इनकी हालत भी बद से बदत्तर है। तिगांव की तरह यहां भी कर्मचारियों और अन्य संसाधन जुटाने में सरकार पूरी तरह नाकाम साबित हो रही है। पहले से मौजूद डिस्पेंसरियों में संसाधन जुटाने की बजाए सरकार नए भवनों के निर्माण में रुपये क्यों बर्बाद कर रही है, यह आसानी से समझा जा सकता है।

इससे पहले कांग्रेस सरकार ने भी एनआईटी इलाके के लोगों को नजदीक अस्पताल उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से सेक्टर 55 में आठ करोड़ रुपये की लागत से भवन बनाया था। लेकिन इसमें आज तक अस्पताल शुरू ही नहीं हो पाया। जिसके कारण यह नया भवन भी धीरे धीरे जर्जर होता जा रहा है।

सरकार चाहे कांग्रेस की हो या भाजपा की निर्माण कार्य के शिलान्यास कर आम जनता को छलने और निर्माण के बाद ठेकेदारों से कमीशन खोरी करने का नेताओं का धंधा यूं ही चलता रहेगा।

गतांक की चीर-फ़ाड़

डा. जुगल किशोर गुप्ता

भ्रष्ट राजनीति, बीमार अस्पताल, लव जिहाद का ढोंग!

मज़दूर मोर्चा के 1-15 जनवरी 2018 के अंक में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व स्थानीय मुद्दों पर अनेक महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुए हैं। लेख 'जब सीपी हो तो ताबेदार तो क्या कर पायेगा बेचारा थानेदार-मामा श्री की खनन लूट का भेद खुलवाने वाले एसएचओ तिगांव का तबादला' में स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर के मामा राजपाल द्वारा प्रशासन व पुलिस विभाग में हस्तक्षेप करने, अनैतिक व गैर कानूनी कार्य करने वाले गिरोहों को संरक्षण प्रदान करने लूट-पाट करने आदि का पूरा पर्दाफ़ाश करने का सराहनीय कार्य किया गया है। मन्त्रीजी द्वारा अपने मामा श्री को प्रशासन व पुलिस विभाग में दखलंदाज़ी व लूट-पाट करने की खुली छूट देने के आरोपों की जनता में आमचर्चा है। ज़ाहिर है इस लूट-मार का माल मामा श्री अकेले उनके पास तो रहता नहीं होगा, बल्कि उसका एक बड़ा हिस्सा मन्त्रीजी को भी मिलता होगा।

स्थानीय विधायक व पूर्व मुख्य संसदीय सचिव सीमा त्रिखा के नज़दीकी टंडन पर भी इसी तरह के आरोप लग रहे हैं। इसके अतिरिक्त दिवाली के दिन जुआ खेलने के प्रकरण में डीसीपी आस्था मोदी की जांच रिपोर्ट को राजनीतिक दबाव में नज़र अंदाज कर सीपी द्वारा पुन: जांच करवाकर निर्दोष पुलिसकर्मी निलम्बित कर दिए गए जिसका लेख 'दिवाली का जुआ केस: थाना कोतवाली के 'निर्दोष' पुलिसिये निलम्बित' में पूरा विवेचन किया गया है। स्पष्ट है कि पुलिस विभाग जनता के जान-माल की सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने की बजाए ऐसे राजनेताओं के इशारों पर नाचते हैं और जो पुलिकर्मी व अधिकारी निष्ठापूर्वक अपने कर्त्तव्य पालन की कोशिश करते हैं उनको खुड्डे लाईन लगा दिया जाता है।

जन कल्याणकारी सरकार का कर्त्तव्य होता है जनता को शिक्षा, स्वास्थ्य व निवास की समुचित सुविधाएं प्रदान करे। केन्द्रीय सरकार जीडीपी का केवल 1.4 प्रतिशत स्वास्थ्य पर तथा 3.7 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च करती है। इसलिये सरकारी असपतालों, डिस्पेंसरियों व शिक्षण संस्थाओं की दशा दयनीय है जिनका 'सरकार की तुगलकी नीति से इलाज को तरस रहे हैं लाखों लोग', नौ महीने से कागजों में चल रहा है एनसीडी क्लीनिक' व 'भगवान भरोसे चल रही है डबुआ कॉलोनी की डिस्पेंसरी' लेखों में उज़ागर किया गया है। सरकार व प्रशासन की लापरवाही के कारण वहां आवश्यक डॉक्टर, नर्सिंग व पैरामेडिकल स्टाफ़ आदि तथा पर्याप्त भवन की कमी बनी रहती है।

इसी तरह सैक्टर 8 के ईएसआई अस्पताल व इसकी डिस्पेंसरियां भी हरियाणा सरकार व ईएसआईसी की उपेक्षा से दुर्दशा की शिकार है जिसका लेख 'भारी दुर्दशा का शिकार सेक्टर 8 का अस्पताल व इसकी डिस्पेंसरियां' में समीचीन वर्णन किया गया है। इसके विपरीत मज़दूर संगठनों के सतत संघर्ष के परिणामस्वरूप एनएच-3 स्थित अस्पताल मेडिकल कॉलेज में परिवर्तित होने के बाद वहां की व्यवस्था व सुविधाओं का 'ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल: संघर्ष से बहुत सुधार, कमियां भी बरकरार' तथा 'ईएसआई बनाम ईएसआईसी' लेखों में उचित वर्णन किया गया है। आशा है कि इससे मज़दूरों एवं उनके आश्रितों को उनकी बिमारियों के समय इलाज कराने में राहत मिलेगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जनता को अच्छे दिन आने, काले धन को वापिस लाकर प्रत्येक के बैंक खाते में 15 लाख रुपये जमा कराने, भारी मात्रा में रोजगार के साधन उपलब्ध कराने, किसानों की आय दुगुना करने आदि के झूठे आश्वासन देकर लोकसभा चुनाव जीतकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सरकार बनाई थी उसी प्रकार राजस्थान में विधानसभा का अलवर क्षेत्र का उपचुनाव जीतने के लिये केन्द्र की मोदी सरकार द्वारा बरसों से बंद पड़े वहां के ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज अस्पताल को चालू करने का नाटक रचने का लेख 'अलवर के उपचुनाव में ईएसआईसी' में खुलासा किया गया है।

पूरी भारत सरकार, भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों तथा आरएसएस संगठन को गुजरात विधानसभा चुनाव में झोंकने, स्वयं मोदी द्वारा वहां 40 से भी ऊपर रैलियां करने, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह द्वारा वहां पूरी तरह डेरा जमाए रखने, साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण करने, पाकिस्तान का मुद्दा उठाने व साम्प्रदायिक राष्ट्रवाद का मुद्दा उछालने के बावजूद अमित शाह के 150 सीट प्राप्त करने के दावे को भाजपा प्राप्त नहीं कर सकी और केवल 99 सीटों तक सिमट कर रह गई जिसका लेख 'गुजरात चुनाव:जीत से कहीं बड़ी चुनौती' में सटीक विश्लेषण किया गया है।

राजस्थान में राजसमंद के शंभूलाल रैगर ने पश्चिमी बंगाल के व्यक्ति की लव लिहाद के नाम पर हत्या कर दी थी जिसका राजस्थान के कट्टर हिन्दुत्व वर्ग ने रैगर का समर्थन किया था तो पश्चिमी बंगाल में इसका बड़ा विरोध किया गया। हिन्दुत्ववादी लोग भूल गए कि उनके प्रमुख नेताओं जैसे विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष अशोक सिंघल, शिवसेना सुप्रीमो बाल ठाकरे, सुब्रहमण्यम स्वामी, पूर्व केन्द्रीय गृह मंत्री लाल कृष्ण आडवाणी आदि की हिन्दू लड़कियों ने मुस्लिम युवकों जनसंघ के नेता सिकंदर बख्त, मोदी सरकार के मन्त्री मुख्तार अब्बास नकवी व सैयद शाह नवाज हुसैन, पूर्व सचिव सलमान हैदर आदि से शादी हुई थी जिसका 'राज समद के शंभू लाल रैगर तो पीएम मटेरियल से कम नहीं' लेख में विवेचन किया गया है। गौरतलब है कि हिन्दुत्ववादियों ने कभी भी इनके विरुद्ध आवाज़ नहीं उठाई। टेलीकॉम इंडस्ट्री के 2 जी स्पेक्ट्रम घोटाले में सीबीआई की विशेष अदालत ने फ़ैसला सुनाया कि 2 जी घोटाला कोई घोटाला ही नहीं था ओर अहम टिप्पणियां करते हुए पूर्व संचार मंत्री ए. राजा, डीएमके नेत्री कनिमोझी आदि को बरी कर दिया परन्तु इस प्रकरण में कुछ अनसुलझे पहलुओं व तथ्यों का '2 जी पिक्चर अभी बाकी है.....', 'ये हैं सीबीआई जज सैनी की 10 बड़ी टिप्पणियां' तथा टेलीकॉम इंडस्ट्री में भूचाल' लेखों में तथ्यात्मक विवेचन किया गया है। कोयला आबंटन घोटाले में निचली अदालत द्वारा झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री तथा मधु कोड़ा को सुनाई गई तीन साल कैद और 25 लाख रुपये के जुर्माने की सज़ा पर दिल्ली हाई कोर्ट ने रोक लगाते हुए कोड़ा को अंतरिम जमानत दे दी है। इन मामलों में ऊपरी अदालत में अपील होनी है जहां के निर्णयों पर लोगों की निगाहें टिकी हैं।

कविता 'खुद चला नैया' के ज़रिए तीन तलाक के मुद्दे पर भाजपा व मोदी द्वारा मुस्लिम औरतों को प्रभावित करने की चलाई जा रही मुहिम तथा पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था पर और दूसरी कविता 'यह नए मिजाज का देश है भाई' द्वारा देश की न्याय व्यवस्था पर उपयुक्त कटाक्ष किया गया है।

अयोध्या में राम मन्दिर बनाने के मामले में हिन्दुत्ववादियों की रणनीति पर 'अब फ़िर से राम मन्दिर की नींव 2019 में रखी जायेगी, तब तक रामजादे आराम करेंगे' तथा टु जी स्पेक्ट्रम घोटाले के प्रकरण में 'टूजी स्पेक्ट्रम' कार्टूनों द्वारा उचित व्यंग्य किया गया है।